

पटाखे पर्यावरण और प्रदूषण

डॉ. मालती दुबे (रावत)

सह. प्राध्यापक

शासकीय स्वशासी कन्या स्नातकोत्तर उत्कृष्टता महाविद्यालय, सागर (म.प्र.)

आज पूरा विश्व जहाँ पर्यावरण के लिये जागरूक हो गया है, वहीं हम अपने त्यौहारों की बदौलत अपना ही भला बुरा नहीं समझ पा रहे हैं। त्यौहारों के बहाने हम अपने पर्यावरण को क्या सौगात दे रहे हैं। पटाखे जलाने से सल्फर डाई आक्साइड, नाइट्रेड, कार्बन मोनो आक्साइड जैसी अनेक जहरीली गैसें वातावरण में फैलती हैं, जो हमारे पर्यावरण के साथ-साथ हमारे स्वास्थ्य के लिये बेहद हानिकारक हैं।

दुखद है कि हमारे ब्रह्मांड में ग्रीन हाउस गैसों के उत्सर्जन में कोई कभी नहीं आ रही है। आंदोलन चलाया जा रहा है कि पटाखों से तौबा करें और हवा को बचायें। कुछ लोगों ने इस अभियान के असर में पटाखे चलाना कम किया है लेकिन दूसरी ओर ऐसे लोग भी कम नहीं हैं, जो दीवाली में पटाखों पर हजारों रुपये फूंक देते हैं ऐसे लोगों का कहना है कि पटाखे के बिना दीवाली, दीवाली नहीं लगती। पटाखे न चलाये तो क्या करें। पटाखों का कोई विकल्प नहीं है। पर्यावरण बिगाड़ने के बजाये विकल्प के रूप में अपने मूल्यों को संजोने संवारने के लिये दीवाली मनाये तो इससे अच्छा क्या हो सकता है। पटाखे जलाने में ग्लोबल वार्मिंग होती है। हमारे आस-पास मौजूद सांस या दिल के मरीजों को पटाखों से निकलने वाले धुँयें से तकलीफ होती है। छोटे बच्चों, बीमार और बूढ़े लोगो को भी परेशानी होती है।

ऐसे त्यौहार-खुशी और ऐसे पटाखों से क्या फायदा जिसकी हवा सांस के माध्यम से हमारे आपके फेफड़ों को बीमार करती हो।

आज आवश्यकता है कि हम मिलकर कोशिश करें अपने जीवन मूल्यों और अपने पर्यावरण को बचाने की। कोशिश करें कि अगर खत्म न कर सकें तो कम कर सकें उस दम घोटने वाले धुँयें को जो दीवाली के नाम पर पटाखे और फुलझड़ी छोड़ते हैं।

दीवाली के नजदीक आते ही इसके खत्म होने तक पटाखे की गगनभेदी गूँज वातावरण में जहरीले गैसों के काले बादल, त्वचा में सूखी खुजलाहट जैसी दिक्कतें शुरू हो जाती है। पटाखों में पर्यावरण को होने वाले नुकसान और मनुष्य की सेहत पर पड़ने वाले नकारात्मक प्रभाव की अनदेखी कर देते हैं।

पटाखों से बहुत ज्यादा ध्वनि प्रदूषण फैलता है और इनमें डेसिबल स्तर उच्च हो जाता है इसके परिणाम स्वरूप वैचेनी, उत्तेजित व्यवहार, गुस्सा, व्याकुलता और किसी भी स्थिति में अत्याधिक प्रतिक्रियाशील होने जैसे लक्षण

उभरते हैं। ज्यादातर पटाखों में 80 डेसिबल से अधिक स्तर की आवाज निकलती है जिस कारण बहरपन उच्च रक्तचाप और अनिद्रा जैसी स्थिति आ जाती है। बच्चे, गर्भवती महिलाओं और सांस की समस्याओं से पीड़ित ज्यादातर लोगों की दिक्कतें अत्याधिक ध्वनि के कारण बढ़ जाती है।

स्वास्थ्य पर खतरा बढ़ने के अलावा पटाखों से परोक्ष रूप से गंभीर दुष्परिणाम भी देखे गये है। त्वचा झुलझ सकती है, गलत तरीके से अतिशबाजी करने के कारण बहुत लोग बुरी तरह जलकर जख्मी हो चुके है और कई लोगों की जाने भी जा चुकी है।

पटाखों के जलने से त्वचा, बाल और आंखों की पुतलियों को भी गंभीर नुकसान पहुँचता है। पटाखों में मौजूद नुकसानदेह रसायन त्वचा में शुष्कता व एलर्जी पैदा करते है। वातावरण में नुकसान देह रसायनों के फैलाने से बालों के रोमकूप कमजोर पड़ जाते हैं जिसके परिणाम स्वरूप बाल टूटने लगते है और बालों की प्राकृतिक संरचना भी बिगड़ती है। पटाखों के कारण आँखों में जरा सी चोट भी एलर्जी और नेत्राहीनता की स्थिति पैदा करती है।

इस दीवाली में हमें प्रतिज्ञा लेनी चाहिये कि नुकसानदायक पटाखों को न कहें और सुरक्षित एवं प्रदूषणमुक्त पर्यावरण बनाने को हाँ कहें।